फाइनेंशियल प्लानिंग में महंगाई को न करें नजरंदाज

मेरा नाम अमृता है। मेरी दो साल की एक बच्ची है। मैं उसकी शादी और शिक्षा के लिए निवेश करना चाहती हूं। मेरे पति का इंदौर में बीपीओ का बिजनेस है। मेरे पति की उम्र 32 साल है और मेरी 28। फिलहाल हमारे पास 3 लाख रुपये कैश है और कुछ म्यूचुअल फंड की सिस्टमेटिक इंवेस्टमेंट प्लान (सिप) हैं। हम 2,000 रुपये का निवेश एचडीएफसी टॉप 200 और आईडीएफसी प्रीमियर में 2,000 रुपये का निवेश कर रहे हैं। मेरे पति की मासिक आय 80,000 रुपये है। अपने सभी खर्चों को पूरा करने के बाद 30,000 रुपये प्रतिमाह की बचत हो जाती है। अगले 20 से 25 साल में हमें 50 लाख रुपये पड़ेगी। अपनी बेटी की शादी और शिक्षा के लिए 25 से 30 लाख रुपये की जरूरत है और बाकी की राशि रिटायरमेंट में काम आएगी। हम हर महीने 10,000 रुपये से 12,000 रुपये का निवेश ही कर पाते हैं। कृपया किसी ऐसी स्कीम के बारे में बताएं जिससे हमारी जरूरत तो पूरी हो ही जाए साथ टैक्स छूट का फायदा भी मिल सके।

फाइनेंशियल प्लानिंग मणिकरन सिंघल द्वारा

इतनी कम उम्र में निवेश की शुरुआत करके निश्चित तौर पर भविष्य में अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। अच्छी बात यह है कि अमृता को अपना लक्ष्य स्पष्ट है। उन्हें निवेश की लक्षित राशि, समय बिलकुल स्पष्ट है। यह बात और है कि मुझे ऐसा लगता है कि ऐसे कई मुद्दे हैं जिसपर अमृता ने सवाल नहीं किया। रिटायरमेंट के लिए फंड बनाने के लक्ष्य में अमृता ने महंगाई का ध्यान नहीं रखा है। रिटायरमेंट के लिए 25 साल बाद 50 लाख रुपए बचाने का लक्ष्य तो ठीक है पर जब आप गहराई से इसकी गणना करेंगे तो पाएंगे कि मुद्रास्फीति यानि की महंगाई का ध्यान रखते हुए यह राशि रिटायरमेंट के लिए पर्याप्त नहीं होगी। घर के खर्चों को देखते हुए इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि परिवार का मासिक खर्च फिलहाल 50,000 रुपये महीने का है। अगर हम इसमें सालाना 6 फीसदी की मुद्रास्फीति को जोड़ लें तो रिटायरमेंट के बाद 4.8 करोड़ रुपये की रकम की जरूरत पड़ेगी। इस फंड को जुटाने के लिए उन्हें हर महीने 22,000 रुपये बचाने की जरूरत पड़ेगी वो भी 80 फीसदी इक्विटी ओरियंटेड फंड और 20 फीसदी का निवेश डेट में करना होगा। इसके बावजूद अगर उन्हें लगता है कि 50 लाख रुपये पर्याप्त है तो उसे 2,300 रुपये प्रति माह बचाने की जरूरत पड़ेगी।

बच्ची की शादी और शिक्षा के लक्ष्य को पूरा करने के लिए 30 लाख रुपये की जरूरत है। अगर हम आज के खर्चों के हिसाब से 10 लाख रुपये शादी के खर्च के लिए मानते हैं तो सालाना 6 फीसदी की मुद्रास्फीति को जोड़ने के बाद 22 साल बाद 66 लाख रुपये की जरूरत पड़ेगी। ऐसे में 66 लाख रुपये जुटाने के लिए उन्हें हर महीने 6,000 रुपये बचाने की जरूरत पड़ेगी। जैसा कि शिक्षा और शादी के खर्च में बड़ा अंतर है तो उन्हें दोनों बचत की रकम को बदलकर अलग अलग प्लानिंग करनी पड़ेगी। अच्छा तो यही रहेगा कि वह फंड के प्रबंधन और वास्तविक बचत की गणना के लिए किसी फाइनेंशियल प्लानर की मदद लें।

इंश्योरेंस की प्लानिंग शामिल किए बगैर कोई प्लान पूरा नहीं होता है। या फिर यूं कहें कि किसी भी तरह की वित्तीय प्लानिंग के लिए इंश्योरेंस पहला कदम है। इसकी वजह यह है कि घर के कमाने वाले व्यक्ति को अगर कुछ भी हो जाता है तो सारी योजनाएं धरी की धरी रह जाएंगी। ऐसे में मैं आपको सलाह दूंगा कि बचत करने से पहले आप अपने परिवार के लिए पर्याप्त बीमित राशि वाली लाइफ, हेल्थ, एक्सीडेंट, क्रिटिकल इलनेस पॉलिसी ले लें।

-लेखक सर्टिफायड फाइनेंशियन प्लानर और द फाइनेंशियल प्लानर्स गिल्ड इंडिया के सदस्य हैं।

अगर आप भी अपने आर्थिक लक्ष्यों जैसे बच्चों की शादी-पढ़ाई, रिटायरमेंट, घर, कार आदि की खरीदारी करना चाहते हैं और अपने लक्ष्यों को सुगमता से प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें अपनी पूरी जानकारी तस्वीर के साथ भेजें। हमारे सर्टिफायड फाइनेंशियल प्लानर आपको आर्थिक लक्ष्य प्राप्त करने में आपकी मदद करेंगे।

नाम- अमृता
शहर- इंदौर
उम्र- 28 साल
पति की उम्र- 32 साल
बिटिया की उम्र- दो साल
पति का व्यवसाय- बीपीओ

मासिक आमदनी
`80,000
मासिक खर्च
`50,000
प्रति माह बचत
`30,000

निवेश
- तीन लाख रुपये कैश
- एचडीएफसी टॉप 200 और आईडीएफसी प्रीमियर में प्रति माह 2,000 रुपये का निवेश

लक्ष्य
- अगले 25-30 साल में 50 लाख रुपये की व्यवस्था ताकि बेटी की शादी और शिक्षा के लिए 25-30 लाख रुपये के बाद बची रकम रिटायरमेंट के काम आ सके।

सोयाबीन निवेश से निकलने का है सही समय

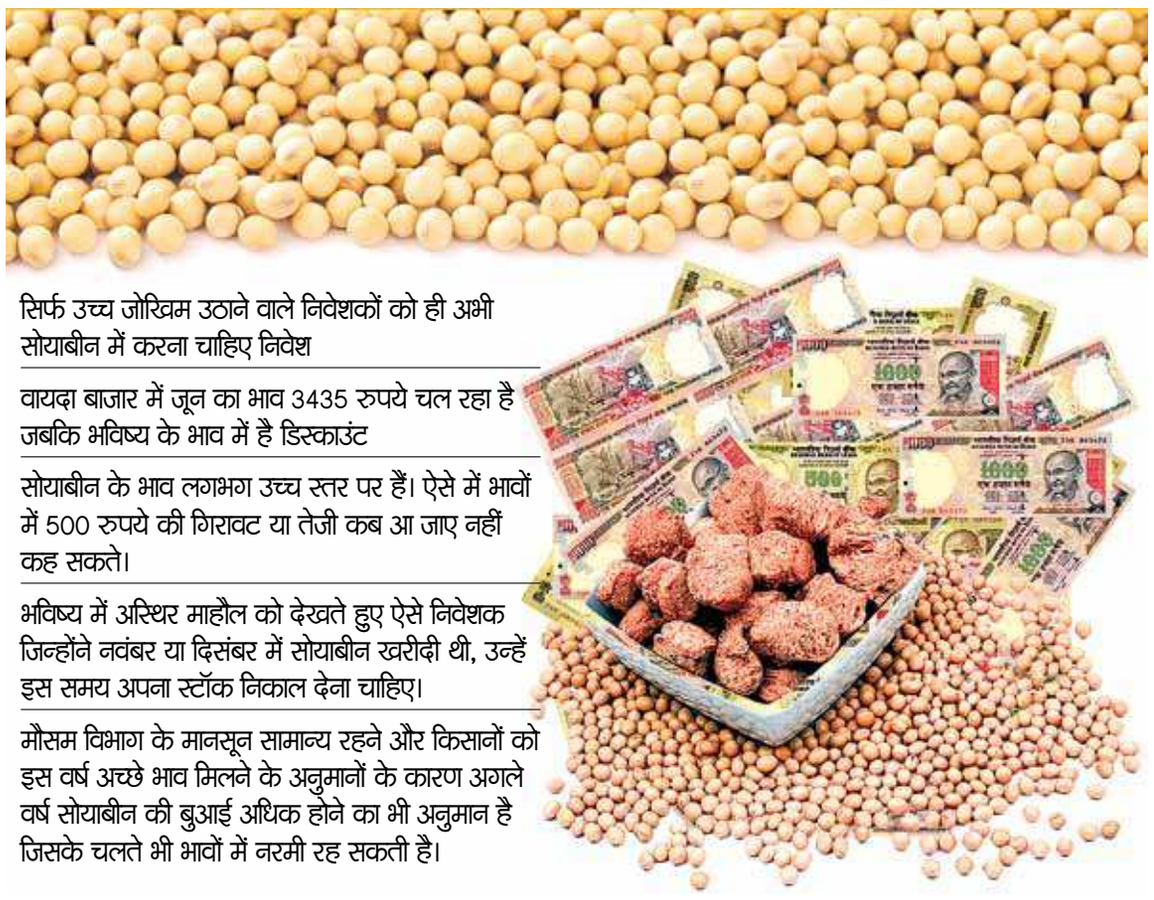

- सिर्फ उच्च जोखिम उठाने वाले निवेशकों को ही अभी सोयाबीन में करना चाहिए निवेश
- वायदा बाजार में जून का भाव 3435 रुपये चल रहा है जबकि भविष्य के भाव में है डिस्काउंट
- सोयाबीन के भाव लगभग उच्च स्तर पर हैं। ऐसे में भावों में 500 रुपये की गिरावट या तेजी कब आ जाए नहीं कह सकते।
- भविष्य में अस्थिर माहौल को देखते हुए ऐसे निवेशक जिन्होंने नवंबर या दिसंबर में सोयाबीन खरीदी थी, उन्हें इस समय अपना स्टॉक निकाल देना चाहिए।
- मौसम विभाग के मानसून सामान्य रहने और किसानों को इस वर्ष अच्छे भाव मिलने के अनुमानों के कारण अगले वर्ष सोयाबीन की बुआई अधिक होने का भी अनुमान है जिसके चलते भी भावों में नरमी रह सकती है।

धर्मेन्द्र सिंह भदौरिया • भोपाल

लगातार रुपये की गिरावट के चलते तेल आयात महंगा होने और प्लांट मांग के बने रहने के कारण सोयाबीन के भावों में तेजी बनी रही है। सोयाबीन के भावों में सीजन की शुरुआत से अभी तक करीब दो गुना का अंतर आ गया है। वर्तमान में सोयाबीन का भाव 3,350 से 3,450 रुपये पर चल रहा है। वहीं दूसरी ओर वायदा बाजार में जून का भाव 3,435 रुपये चल रहा है जबकि आगे के भाव में डिस्काउंट है। भविष्य में सोयाबीन का भाव यूरोपीय माहौल, रुपये की स्थिति और सबसे महत्वपूर्ण अमेरिका और भारत में मौसम के रुख पर निर्भर करेगा।

सोयाबीन के भाव लगभग उच्च स्तर पर हैं। ऐसे में भावों में 500 रुपये की गिरावट या तेजी कब आ जाए नहीं कह सकते। भविष्य में अस्थिर माहौल को देखते हुए ऐसे निवेशक जिन्होंने नवंबर या दिसंबर में सोयाबीन खरीदी थी इस समय अपना स्टॉक निकाल देना चाहिए। आगे बाजार के अस्थिर रुख को देखते हुए सिर्फ उन्हीं निवेशकों को इस कमोडिटी में पैसा लगाना चाहिए जो अधिकतम जोखिम उठा सकते हों।

द सोयाबीन प्रोसेसर एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सोपा) के प्रवक्ता राजेश अग्रवाल ने कहा कि दिसंबर से अभी तक भावों में करीब 1,400 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी दर्ज की गई है। जिस तरह से रुपये में गिरावट दर्ज की जा रही है उससे न सिर्फ आयातित खाद्य तेल महंगे हुए हैं बल्कि निर्यातकों को भी फायदा हुआ है। निर्यातकों को ज्यादा पैसा मिलने के कारण वे भी महंगे दाम दे रहे हैं जबकि महंगे तेल आयात के कारण घरेलू बाजार में भावों बढ़ रहे हैं। प्लांट की मांग बनी रहने के कारण भावों में तेजी बनी हुई है। इस वर्ष करीब 119 लाख मीट्रिक टन सोयाबीन के उत्पादन का अनुमान था। सोपा के प्रवक्ता अग्रवाल के अनुसार, बाजार में अभी तक करीब 82 लाख मीट्रिक टन माल आ चुका है। जबकि करीब 15 लाख मीट्रिक टन सोयाबीन का प्रयोग बीज के रूप में होगा शेष 25 लाख मीट्रिक टन ही अब बाजार में आना है। अगर सामान्य स्थिति रहती है तो सोयाबीन के भावों में और 300 से 400 रुपये का सुधार हो सकता है। लेकिन बाजार की परिस्थिति को देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि निवेशक को सोयाबीन स्टॉक को रोक कर रखना चाहिए। पिछले साल करीब नौ लाख टन पुराना स्टॉक भी बाजार में आया था जबकि इस बार कैरी फारवर्ड स्टॉक दो लाख टन ही था। इसलिए भविष्य के भाव दक्षिण अमेरिका में मौसम और रुपये की चाल पर निर्भर कर सकता है, वैसे प्लांट खरीदारी के कारण भावों में बड़ी तेजी की उम्मीद कम ही है। मौसम विभाग के मानसून सामान्य रहने और किसानों को इस वर्ष अच्छे भाव मिलने के अनुमानों के कारण अगले वर्ष सोयाबीन की बुआई अधिक होने का भी अनुमान है जिसके चलते भी भावों में नरमी रह सकती है। इसलिए निवेशकों को इस समय बड़े रिटर्न की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

निवेश और टेस्ट क्रिकेट में खूब हैं समानताएं

अक्षय गुप्ता

टेस्ट मैच क्रिकेट के साथ ही धैर्य, फिटनेस, साहस और पक्के इरादे की तकनीक गायब होती जा रही है। अब टेस्ट मैचों के लिए दर्शकों का विशाल हुजूम कहां उमड़ता है। इसकी बजाय टी-20 के स्टेडियम ठसाठस भरे रहते हैं। यह मौजूदा पीढ़ी के बदलाव को बताता है। वैसे, बदलाव होनी कोई बुरी बात नहीं है। दरअसल, हममें से अधिकतर युवा, सक्षम व ऊर्जावान हैं-नेक्स्ट जेन रनों का अंबार चाहते हैं, रोमांच, ड्रामा, एक्शन चाहते हैं और वे फटाफट परिणाम देखना चाहते हैं, बिल्कुल टी-20 की शैली वाला।

यही है उनकी सोच में बदलाव, और इसमें कुछ बुरा भी नहीं है। यहां पर मैं आपको बताना चाहता हूं कि क्रिकेट मैच व निवेश दोनों से आपकी आकांक्षाओं में समानता भी होती है। जी हां, निवेश से हम बहुत ज्यादा पैसा तो बनाना चाहते हैं, पर कहीं कुछ समझौते से दूर भागते हैं। वास्तव में, क्रिकेट की तकनीक यहां भी लागू होती है।

जी हां यह सत्य है। पर पैसा बनाने की असलियत भिन्न है। सभी कामयाब निवेश पंडितों का अनुभव और भरोसा धैर्य, निरंतरता, फिटनेस एवं वैराइटी (एसेट क्लास) के सिद्धांत में है, ठीक यही बात किसी अच्छे टेस्ट खिलाड़ी के लिए भी जरूरी होती है। आइए इसे विस्तार से समझते हैं।

निवेशकों को योजना बनाने, उस पर अमल करते हुए अपने ध्येय -निवेश के लक्ष्य पाने में लगना होता है। संभव है कि इस रास्ते में अड़चनें आएं, दर्द भी मिले और कुछ असफलताएं भी हों। पर उन्हें डटे रहना चाहिए।

हमने सभी बाजारों में काफी अस्थिरता देखी है और इसमें से तत्काल अवसर का लाभ उठाने व नुकसान कम करने के लिए हमारा शारीरिक व मानसिक रूप से चौकन्ना भी रहना जरूरी है।

विभिन्न एसेट क्लास को करें निवेश में शामिल ताकि जोखिम कम हो।

1- धैर्य

राहुल द्रविड़ को देश का सबसे कामयाब बल्लेबाज क्यों कहा जाता है। दरअसल उनमें गजब का धैर्य है। यही उनकी कामयाबी का प्रमुख तत्व है। इसी तरह, जब लंबे समय के लिए कोई निवेश करते हैं तो ध्येय न पूरे होने पर आपकी सहनशीलता यानी धैर्य की कड़ी परीक्षा होती है। हालांकि, इंतजार का फल मीठा ही होता है। मैं आपको बताता हूं कैसे? देश में सोने की कीमतों में तकरीबन 7 सालों-1994 से 2001 तक कोई खास बढ़ोतरी दर्ज नहीं की गई। अगर इस दौरान कोई निवेशक धैर्य खोकर सोने में निवेश करना बंद कर देता तो वह अगले 10 सालों के दौरान-2001-2011, 700 फीसदी की बढ़ोतरी का मौका भी खो देता। इस तथ्य को इस बात से भी समझ जा सकता है कि अमेरिका में स्पॉट गोल्ड की कीमतों में साल 1984-2003 तक यानी कि 20 सालों तक कोई खास बढ़ोतरी नहीं हुई। वे उसी स्तर पर ही रहीं।

2- निरंतरता

सचिन तेंडुलकर के लिए शतक पर शतक बनाना दरअसल लगातार अभ्यास, हरेक पारी के लिए योजना बनाने व नाकामयाबियों से सीखते रहने की एक अंतहीन श्रृंखला है। इसी तरह से निवेशकों को भी योजना बनाने, उस पर अमल करते हुए अपने ध्येय -निवेश के लक्ष्य पाने में लगना होता है। संभव है कि इस रास्ते में अड़चनें आएं, दर्द भी मिले और कुछ असफलताएं भी हों। पर आप डटे रहिए। उपरोक्त उदाहरण में सोने के निवेश में 7 सालों की निराशा के बावजूद और भविष्य के संभावित रिटर्न को न जानते हुए अगर किसी ने आखिरी 10 सालों-2001 से 2011 के बीच कुल 6 लाख रुपये, मतलब प्रत्येक महीने 5000 रुपये का निवेश किया होता तो उसे 19 लाख रुपए मिलते। यानी कि 22 फीसदी रिटर्न जो कि किसी अन्य प्रकार के निवेश से मिलने वाले रिटर्न से ज्यादा है।

3- फिटनेस

अगर हम अपनी स्मृतियों को कुछ समय पीछे ले जाएं तो हमें याद आएगा कि जोंटी रोड्स या रॉबिन सिंह जैसे क्रिकेटर जब सक्रिय क्रि केट में थे तब वे किसी सीरीज से फिटनेस की वजह से शायद ही कभी मिस हुए हों। इस तथ्य के बावजूद कि वे अपने वर्ग में सर्वोत्तम प्रतिभाशाली नहीं थे पर वे शारीरिक व मानसिक दोनों तरह की गजब की फिटनेस की वजह से कामयाब माने जाते थे। यह फिटनेस लगातार वर्क-आउट तथा एक्सीलेंस के प्रति प्रतिबद्धता से आती है। इसी तरह से आपके निवेश के लक्ष्यों की पूर्ति में आपकी शारीरिक व मानसिक दोनों तरह की की फिटनेस की भी भूमिका होती है। निवेश को लगातार मॉनिटर करने की जरूरत होती है और इसे शारीरिक व मानसिक दोनों तरह से चुस्त-दुरूस्त यानी कि फिट रह कर ही कर सकते हैं। वित्तीय सलाहकार के साथ लगातार संपर्क भी बना रहना चाहिए। हमने सभी बाजारों में काफी अस्थिरता देखी है और इसमें से तत्काल अवसर का लाभ उठाने व नुकसान कम करने के लिए हमारा शारीरिक व मानसिक रूप से चौकन्ना भी रहना जरूरी है।

4- वैराइटी

श्रीलंका के मुथैया मुरलीधरन से दुनिया में सबसे ज्यादा विकेट यूं ही नहीं प्राप्त कर लिया। उनके विकेटों की संख्या इतनी ज्यादा है कि उनके नजदीक कोई नहीं है। दरअसल उनके तरकश में कई किस्म के तीर है- दूसरा, फिलपर, फास्टर, स्ट्रेट आदि। अगर इसे निवेश से जोड़ें तो सोने में निवेश बनाम अन्य कमोडिटीज-तेल, धातु, एग्री-कमोडिटीज, चांदी आदि, डेट, इक्विटी व रियल इस्टेट से तुलना करें। निवेशक के पास सिर्फ एक ही नहीं बल्कि अन्य कई एसेट क्लास भी होने चाहिए। इनकी उचित मात्रा जो कि आपके निवेश लक्ष्य और जोखिम सहन करने की आपकी क्षमता पर आधारित हो, निवेश में शामिल की जानी चाहिए।

सारांश यह है कि निवेश की प्रक्रिया किसी फटाफट टी-20 मैच जैसी नहीं होती पर यह सुनिश्चित करती है कि आप बिना अगले दिन, महीने या साल की चिंता किए हुए एक टी-20 मैच में सहभागी हो सकते हैं। हालांकि, मैं रोमांच की वजह से निजी तौर पर टी-20 मैच देखना पसंद करता हूं लेकिन निवेश के मामले में मैं टेस्ट मैच की तकनीक ही अपनाता हूं ताकि मुझे सबसे अच्छा रिटर्न मिल सके।

- लेखक पियरलेस म्यूचुअल फंड के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। प्रकाशित विचार उनके निजी हैं।

समाधान

जितेंद्र सोलंकी
सर्टिफायड फाइनेंशियल प्लानर,
जे. एस. फाइनेंशियल एडवाइजर्स, दिल्ली

माता-पिता के लिए अलग से लें हेल्थ इंश्योरेंस

मैं आईटी कंपनी में काम करता हूं और नियोक्ता के ग्रुप इंश्योरेंस के तहत कवर्ड हूं। अब मेरे नियोक्ता ने मेरे माता-पिता को पॉलिसी में शामिल करना छोड़ दिया है। माता-पिता की उम्र 55 और 58 वर्ष है। अब मुझे क्या करना चाहिए? उनके लिए कौन सी पॉलिसी लेना ठीक रहेगा?

-राजन, चंडीगढ़

ग्रुप इंश्योरेंस स्कीम अधिकांश बीमा कंपनियों के लिए घाटे का सौदा बन गया है क्योंकि इसका क्लेम रेशियो अधिक होता है। इसकी प्रमुख वजह माता-पिता का कवरेज रहा है और कंपनियों रिन्यूअल के दौरान इसे एक्सक्लूड करते हुए चल रही हैं। मैं हमेशा सलाह देता आया हूं कि केवल नियोक्ता के हेल्थ इंश्योरेंस के भरोसे न रहते हुए अपने लिए और अपने परिवार के लिए अलग से हेल्थ इंश्योरेंस कवर लिया जाना चाहिए। आप अपने माता-पिता के लिए अभी कई कंपनियों से हेल्थ इंश्योरेंस प्लान ले सकते हैं क्योंकि अभी तक वह अधिकतम उम्र सीमा तक नहीं पहुंचे हैं। आप अपोलो म्यूनिख, मैक्स बुपा और स्टार हेल्थ की पॉलिसियों पर विचार कर सकते हैं।

मैं रिलायंस ग्रोथ और विजन फंडों में नियमित रूप से निवेश कर रहा हूं। अब मुझे देखने में आ रहा है कि इन फंडों का प्रदर्शन थम सा गया है। कृपया सलाह दें कि मुझे क्या करना चाहिए?

-राजेश, भोपाल

रिलायंस विजन और ग्रोथ फंड रिलायंस म्यूचुअल फंड के ट्रेड मार्क हुआ करते थे। लगातार कुछ वर्षों तक इनका प्रदर्शन अच्छा रहा। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों से इन दोनों फंडों का प्रदर्शन बुरा रहा है। आपको इन फंडों से निकासी कर लार्ज कैप फंडों जैसे बिड़ला सन लाइफ फ्रंटलाइन इक्विटी और एचडीएफसी इक्विटी में निवेश करना चाहिए। मिड और स्मॉल कैप श्रेणी में आप जिन फंडों में निवेश पर विचार कर सकते हैं उनमें आईडीएफसी प्रीमियर इक्विटी फंड और डीएसपीबीआर स्मॉल एंड मिड कैप फंड शामिल हैं। इनका प्रदर्शन अपेक्षाकृत अच्छा रहा है।

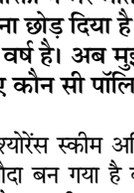

9999440366
पर एसएमएस के जरिए खबरों पर आप अपना फीडबैक भेज सकते हैं

सूचना

इस पेज पर रोजाना पर्सनल फाइनेंस से जुड़ी गुत्थियों को सुलझाया जाता है।

- मनी मंत्र- शनिवार
- मेरा पैसा मेरा शेयर- सोमवार
- मेरा पैसा मेरा बीमा- मंगलवार
- मेरा पैसा मेरी जायदाद- बुधवार
- कर्ज से कमाई- गुरुवार
- मेरा पैसा मेरा फंड- शुक्रवार

अगर आपकी भी कोई समस्या है या फिर कोई सुझाव देना चाहते हैं, तो हमें पत्र जरूर लिखें। आप हमें ईमेल और एसएमएस भी कर सकते हैं। हमारा पता है-

बिज़नेस भास्कर
2ई/22, लोअर ग्राउंड फ्लोर,
झंडेवालान एक्सटेंशन, (स्वामी रामतीर्थ नगर)
नई दिल्ली-110055
E-mail - editor@businessbhaskar.net
-संपादक

(डिसक्लेमर : संबंधित कंपनियों का आकलन निवेश सलाहकारों और ब्रोकिंग रिसर्च फर्मों ने शोध के आधार पर किया है। निवेश से पहले जोखिम का आकलन खुद भी करें। नुकसान व जोखिम आदि के लिए डीबी कॉर्प लिमिटेड जिम्मेदार नहीं होगी।)